ध्यान भरी

शिव भगवान ध्यान के प्रतीक हैं।

ध्यान ही उनका जन्मस्थान है।

ध्यान ही उनका गंतव्य है।

ध्यान ही शिव का संदेश है।

शिव त्रिनेत्र हैं।

दो आँखें सभी की होती हैं, तीसरी आँख केवल ध्यानियों की होती है। यह तीसरी आँख ही ध्यान नेत्र है, वही ज्ञान-नेत्र है।

उस सदाशिव के हाथ में डमरू है।

उससे शिव जी ध्यान भरी बजा रहे हैं। क्या बजाया?

बेटा! सब ध्यान कीजिए। आँखें बन्द कीजिए।

साँस पर ध्यान रखिए। आनन्द प्राप्त कीजिए।

शिव भगवान सम बनिए। यही उनका दिया संदेश है।

वे फिर कह रहे हैं-

मैं भी ध्यान कर रहा हूँ। आप भी ध्यान कीजिए।

ऐसा करने से आपको भी अच्छा लगेगा।

आप भी आत्म जागरण कीजिए। ध्यान पर विश्वास कीजिए।

इस प्रकार परमशिव सदा अपना दिव्य संदेश हमें दे रहे हैं।

ऐसे शिव जी को अपने दिव्यचक्षु की भेंट देना हमारा कर्त्तव्य है। वही सही भक्ति व पूजा है।

वही सही प्रार्थना और सही समर्पण है।

अब हम भी ध्यान भरी को बजाएँगे।